The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 8 | August 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# विभाजन की विभीषिका: 1947 में पंजाब की सांप्रदायिक हिंसा के गहरे जख्म

**मुबश्शिर,**
शोधार्थी, इतिहास विभाग, निम्स विश्विद्यालय राजस्थान, जयपुर
**डॉ. दिलावर नबी भट्ट,**
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, निम्स विश्विद्यालय राजस्थान, जयपुर

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Keywords:**
भारत का विभाजन, पंजाब, सांप्रदायिक दंगे, प्रवासन, हिंसा, सामाजिक–राजनीतिक प्रभाव।

**ABSTRACT**

1947 में पंजाब का विभाजन दक्षिण एशियाई इतिहास में एक दुखद घटना में से एक हैं। इस घटना ने पंजाब में विविध समुदायों के शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व को तोड़ दिया, जिससे मानव इतिहास में सबसे बड़ा सामूहिक प्रवासन हुआ। तीव्र सांप्रदायिक तनाव और राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से प्रेरित विभाजन ने इस क्षेत्र की सामूहिक स्मृति पर गहरे निशान छोड़े, इसके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को नया आकार दिया। यह शोध पत्र विभाजन के दौरान हुई सांप्रदायिक हिंसा एवं उसके कारणों और परिणामों पर प्रकाश डालता है। । यह शोध पत्र विभाजन के दौरान सांप्रदायिक हिंसा की प्रमुख घटनाओं की भी जांच करता है, जिसमें रावलपिंडी नरसंहार, अमृतसर दंगे और लाहौर दंगे शामिल हैं, जो सांप्रदायिक संघर्ष की क्रूर प्रकृति को रेखांकित करते हैं। यह शोध पत्र विभाजन से उत्पन्न मानवीय संकट पर भी चर्चा करता है, जिसमें लाखों लोग विस्थापित हुए और हिंसा, बीमारी और भूख से लोगों की जान चली गई।

## परिचय

1947 में पंजाब का विभाजन दक्षिण एशियाई इतिहास में एक दुखद घटना थी, जो ब्रिटिश शासन के भारत और पाकिस्तान के स्वतंत्र प्रभुत्वों में विभाजन का प्रतीक था। जैसे ही भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आजादी

मिली, पंजाब प्रांत धार्मिक आधार पर विभाजित कर दिया गया। पूर्वी भाग भारत का हिस्सा बन गया और पश्चिमी भाग पाकिस्तान के नाम से नया राष्ट्र बना दिया गया। यह विभाजन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन के बीच तीव्र सांप्रदायिक तनाव और राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से प्रेरित था।

पंजाब क्षेत्र, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक समृद्धि के लिए जाना जाता है, अचानक अराजकता और हिंसा की चपेट में आ गया। एक समय से शांतिपूर्वक रहते आ रहे मुसलमानों, हिंदुओं, सिखों और अन्य समुदायों का अस्तित्व बिखर गया क्योंकि लाखों लोगों को नई खींची गई सीमाओं के पार पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। विभाजन ने मानव इतिहास में सबसे बड़े सामूहिक प्रवासन को जन्म दिया, जिसमें नरसंहार, आगजनी और क्रूर हमलों सहित बड़े पैमाने पर अत्याचार हुए। कई लाख लोग हताहत हुए और लगभग 14 मिलियन लोगों का विस्थापन हुआ। उर्वशी बुटालिया अपनी किताब में लिखती हैं *"विभाजन के साथ हुई हिंसा इतनी तीव्रता और पैमाने की थी जो पहले कभी नहीं देखी गई थी।"* (बुटालिया, 1998,)

पंजाब के विभाजन ने न केवल भू–राजनीतिक मानचित्र को विकृत कर दिया, बल्कि लोगों की सामूहिक स्मृति और पहचान पर भी गहरे निशान छोड़े। इसने क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को नया आकार दिया। विस्थापन और सांप्रदायिक दंगो को बढ़ावा दिया। 1947 की घटनाओं और उनके परिणामों को समझना ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिशीलता को समझने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आज भी भारत, पाकिस्तान और उनके संबंधों को प्रभावित कर रहा है।

विभाजन के दौरान पंजाब की पहचान उसके रणनीतिक महत्व, विविध जनसांख्यिकीय संरचना और व्यापक राजनीतिक और धार्मिक संघर्षों से थी और इन्ही कारणों से ब्रिटिश भारत का विभाजन हुआ। पंजाब भौगोलिक, आर्थिक और सैन्य दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था। इसकी सीमा अफगानिस्तान से लगती है और ऐतिहासिक रूप से यह भारतीय उपमहाद्वीप में आक्रमणों का प्रवेश द्वार रहा है। यह प्रांत एक कृषि प्रधान क्षेत्र भी था, जो अपनी उपजाऊ भूमि और गेहूं, कपास और अन्य फसलों के उत्पादन के माध्यम से ब्रिटिश भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता था। लाहौर, अमृतसर और लुधियाना जैसे प्रमुख शहरों ने इसके महत्व को और रेखांकित किया। पंजाब अत्यधिक विविध आबादी का क्षेत्र था जिसमें मुस्लिम, हिंदू, सिख और ईसाइयों और अन्य लोगों के छोटे समुदाय शामिल थे। मुसलमानों की जनसंख्या थोड़ी ज्यादा थी, जबकि हिन्दू और सिख कम संख्या में रहते थे। विविधता होने के बावजूद भी सब लोग शांतिपूर्वक ढंग से घुल मिल कर रहते थे। (अहमद, 2021)

पंजाब का विभाजन मुख्य रूप से जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गांधी जैसे नेताओं के नेतृत्व वाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व वाली अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के बीच व्यापक राजनीतिक और

धार्मिक संघर्षों से प्रेरित था। उनका मानना था कि हिंदू और मुस्लिम दो अलग–अलग धर्म हैं जिनके अपने अलग–अलग विचार और मान्यताएं हैं। वे एक राष्ट्र में एक साथ मिलकर नहीं रह सकते।

ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन ने तनाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''फूट डालो और राज करो'' की नीति, जिसने प्रशासनिक सुविधा के लिए सांप्रदायिक पहचान पर जोर दिया, ने धार्मिक विभाजन को और गहरा कर दिया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच सत्ता–साझाकरण समझौता करने में असमर्थता के कारण अंग्रेजों को विभाजन योजना को जल्दबाजी में लागू करना पड़ा। आयशा जलाल के अनुसार, *''भारत का विभाजन 20वीं सदी के दक्षिण एशिया में केंद्रीय ऐतिहासिक घटना है, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंत और दो संप्रभु राज्यों के निर्माण का प्रतीक है''*। (जलाल, 1995)

ब्रिटिश भारत के लिए विभाजन की घोषणा स्वतंत्रता और उसके बाद उपमहाद्वीप के विभाजन की अगुवाई में एक महत्वपूर्ण क्षण था। इस योजना की औपचारिक घोषणा भारत के अंतिम ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड लुईस माउंटबेटन ने 3 जून, 1947 को राष्ट्र के नाम एक प्रसारण के माध्यम से की थी। विभाजन योजना माउंटबेटन योजना पर आधारित थी, जिसे भारतीय राजनीतिक नेताओं के साथ लंबी बातचीत और परामर्श के बाद तैयार किया गया था।

अपनी घोषणा में लॉर्ड माउंटबेटन ने विभाजन योजना के मुख्य तत्वों को रेखांकित किया। योजना में दो अलग–अलग प्रभुत्व, भारत और पाकिस्तान के निर्माण का प्रस्ताव रखा गया, जिन्हें ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता दी जाएगी। भारत मुख्य रूप से एक हिंदू राष्ट्र होगा, जबकि पाकिस्तान मुसलमानों के लिए एक अलग मातृभूमि के रूप में स्थापित किया जाएगा।

विभाजन योजना में भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाओं का सीमांकन शामिल था, जिसमें धार्मिक जनसांख्यिकी के आधार पर दोनो राष्ट्रों को विशिष्ट प्रांत और क्षेत्र दिए गए थे। (मून, 2002) रैडक्लिफ रेखा, जिसका नाम सर सिरिल रैडक्लिफ के नाम पर रखा गया था, को पंजाब और बंगाल जैसे प्रांतों को विभाजित करते हुए सीमाएँ खींचने का काम सौंपा गया था। सबसे अधिक आबादी वाले और जातीय रूप से विविध प्रांतों में से दो, पंजाब और बंगाल को धार्मिक आधार पर विभाजित किया जाना था। इस निर्णय का उद्देश्य एक अलग मुस्लिम राष्ट्र के लिए अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की मांगों को संबोधित करना था, साथ ही उन क्षेत्रों में हिंदू और सिख समुदायों की आकांक्षाओं को स्वीकार करना भी था।

इस घोषणा ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत और पाकिस्तान के नवगठित राष्ट्रों में सत्ता के हस्तांतरण का संकेत दिया। इसने सत्ता के औपचारिक हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त, 1947 की समय सीमा तय की, जो भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग दो शताब्दियों के ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंत का प्रतीक था। विभाजन योजना की घोषणा को पूरे उपमहाद्वीप में मिश्रित प्रतिक्रियाएँ मिलीं। जहां कुछ नेताओं ने सांप्रदायिक तनाव और राजनीतिक

गतिरोध के व्यावहारिक समाधान के रूप में योजना का स्वागत किया, वहीं अन्य ने व्यापक हिंसा और बड़े पैमाने पर विस्थापन सहित संभावित परिणामों के बारे में गहरी आपत्ति और चिंता व्यक्त की।

जैसे ही विभाजन योजना की घोषणा की गई और उपमहाद्वीप को भारत और पाकिस्तान के नए राष्ट्रों में विभाजित करने की प्रक्रिया शुरू हुई, धार्मिक समुदायों के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया, जिससे बड़े पैमाने पर हिंसा भड़क उठी।

प्रशासनिक सुविधा के लिए सांप्रदायिक पहचान पर जोर देने वाली दशकों की ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों के बीच धार्मिक विभाजन को गहरा कर दिया। विभाजन योजना ने ही, जिसमें प्रांतों को धार्मिक आधार पर विभाजित करने की मांग की थी, इन तनावों को और बढ़ा दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के बीच सत्ता संघर्ष और विभाजन को लागू करने की जल्दबाजी ने समुदायों के बीच अविश्वास और संदेह को बढ़ावा दिया। दोनों पक्षों के राजनीतिक नेता सांप्रदायिक तनाव और हिंसा को पर्याप्त रूप से रोकने में विफल रहे।

खासकर पंजाब और बंगाल जैसे मिश्रित धार्मिक आबादी वाले क्षेत्रों में, आर्थिक अनिश्चितता, भूमि विवाद और विभाजन के कारण घर और आजीविका खोने के डर ने चिंताओं को और बढ़ा दिया और सामाजिक अशांति को भी बढ़ावा दिया। देश के विभिन्न हिस्सों में सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठी, लोगों ने विरोधी धार्मिक समुदायों के सदस्यों पर हमला और उनकी हत्या करना शुरू कर दिया । शहरों, कस्बों और गांवों में नरसंहार हुए, जिसके परिणामस्वरूप अनगिनत लोगों की जान चली गई। (खोसला, 2002)

महिलाओं और बच्चों के जबरन धर्म परिवर्तन और अपहरण की खबरें सामने आई । उथल–पुथल के इस दौर में महिलाएं विशेष रूप से यौन हिंसा और शोषण की शिकार हुई । मेनन एवं भसीन लिखती हैं कि *''विभाजन के दौरान हिंसा लिंग आधारित थीय महिलाओं को न केवल उनकी धार्मिक पहचान के लिए बल्कि उनके लिंग के लिए भी निशाना बनाया गया।''* (मेनन एवं भसीन, 1998)

आगजनी और बर्बरता ने घरों, व्यवसायों और धार्मिक स्थलों को निशाना बनाया और उनको नष्ट कर दिया गया, जिससे बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ और संपत्ति का नुकसान हुआ। विभाजन के दौरान हुई हिंसा के कारण इतिहास में सबसे बड़ा सामूहिक प्रवासन हुआ, जिसमें लाखों लोग सुरक्षा की तलाश में अपने घरों से भाग गए। हजारों लोग भूख, बीमारी और हिंसा से मर गए। विभाजन ने दक्षिण एशिया के लोगों के जीवन पर गहरे घाव छोड़े। सलमान रुश्दी लिखते हैं, *''सांप्रदायिक हिंसा के पीड़ितों के क्षत–विक्षत शवों को रोजाना सड़कों पर फेंक दिया जाता था, जीवन बहुत बेकार हो गया और समाज में वेहसीपन का माहौल भर गया।''* (रुश्दी, 1981)

रावलपिंडी नरसंहार, अमृतसर दंगे और लाहौर दंगे 1947 में ब्रिटिश भारत के विभाजन के दौरान प्रमुख घटनाएं थीं, जो सांप्रदायिक हिंसा की तीव्रता और इससे होने वाली मानवीय पीड़ा को उजागर करती थीं।

रावलपिंडी नरसंहार मार्च 1947 में पंजाब प्रांत (अब पाकिस्तान में) के एक शहर रावलपिंडी में मुसलमानों और सिखों के बीच हुई हिंसक झड़पों की एक श्रृंखला थी। हिंसा का कारण एक सिख मंदिर पर कब्जे को लेकर विवाद था। लेकिन मुस्लिम और सिख समुदायों के बीच आंतरिक तनाव तेजी से व्यापक दंगों और नरसंहार में बदल गया। हिंसा में दोनों पक्षों की ओर से क्रूर हमले, आगजनी और हत्याएं हुईं, जिसके परिणामस्वरूप जान–माल का काफी नुकसान हुआ। मरने वालों की संख्या का अनुमान व्यापक रूप से भिन्न है, जिसमें कई सौ से लेकर कई हजार तक के आंकड़े शामिल हैं। एस.जी.पी.सी. की रिपोर्ट के अनुसार रावलपिंडी शहर की घटना इस प्रकार है,

5 मार्च 1947 को लाहौर में हिंदू और सिख छात्रों पर फायरिंग की खबर सुनने के बाद रावलपिंडी के हिंदू और सिख छात्रों ने पंजाब में एक सांप्रदायिक मुस्लिम लीग मंत्रालय के गठन के मुसलमान परिवार के खिलाफ और अहिंसक हिंदू और छात्रों के जुलूस पर पुलिस गोलाबारी का विरोध जताते हुए, एक जुलूस निकाला। इस जुलूस पर मुस्लिम लीग के लोगों ने हमला कर दिया। एक खुली लड़ाई हुई जिसमें मुसलमानो को मुंह की खानी पड़ी। फिर ग्रामीण इलाकों से एक विशाल मुसलमान भीड़ जिसे इस क्षेत्र के एक मुसलमान धार्मिक प्रमुख गोरा के पीर द्वारा उकसाया गया था शहर पर टूट पड़ी। लेकिन हिंदू और सिखों ने अपने मोहल्ले में खाइयो में रहकर लड़ाई की और मुसलमान फिर यहां लड़ाई हार गए। (अहमद, 2021)

भारत के पंजाब राज्य में स्थित अमृतसर शहर में अगस्त 1947 में (अमृतसर दंगे, अगस्त 1947) विभाजन योजना की घोषणा के बाद दंगे और सांप्रदायिक हिंसा देखी गई । अमृतसर, हिंदू और सिख दोनों के लिए अपने धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। विभाजन के करीब आते ही सांप्रदायिक तनाव भड़क गया। दंगों के दौरान, भीड़ ने अल्पसंख्यक समुदायों के सदस्यों को निशाना बनाया, जिससे बड़े पैमाने पर हत्याएं, आगजनी और लूटपाट हुई। हिंसा ने विशेष रूप से कमजोर शरणार्थी वाली आबादी को प्रभावित किया, जिन्होंने शहर में विभाजन की अराजकता के दौरान आश्रय मांगा था । अमृतसर दंगों ने निवासियों के बीच भय और असुरक्षा की भावना पैदा की और क्षेत्र में सांप्रदायिक विभाजन को और बढ़ा दिया।

पंजाब की राजधानी लाहौर (अब पाकिस्तान में) में अगस्त 1947 में विभाजन की घोषणा के बाद लाहौर दंगे (अगस्त–सितंबर 1947) में तीव्र सांप्रदायिक हिंसा और दंगे हुए। मुस्लिम, हिंदू और सिखों की मिश्रित आबादी वाले इस शहर में सांप्रदायिक तनाव बढ़ने के कारण क्रूर हमले और नरसंहार हुए। लाहौर दंगों के दौरान, भीड़ ने अल्पसंख्यक वर्ग के सदस्यों को निशाना बनाया, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर विनाश हुआ। हिंसा ने शहर के विभिन्न हिस्सों को अपनी चपेट में ले लिया जिससे वहां के निवासी असुरक्षा के कारण अपने घरों को छोड़कर

भाग गए । इस कारण वहां पर बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ। लाहौर दंगों ने विभाजन के घावों को और गहरा कर दिया और शहर के निवासियों के बीच अविश्वास और कड़वाहट की एक स्थायी छाप छोड़ दी।

ये प्रमुख घटनाएं ब्रिटिश भारत के विभाजन के दौरान सांप्रदायिक हिंसा की क्रूर और दर्दनाक प्रकृति को रेखांकित करती है। ये दंगे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक कारकों की जटिल परस्पर क्रिया के कारण भड़के थे।

ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन ने ऐसी नीतियां लागू कीं, जिन्होंने प्रशासनिक सुविधा के लिए सांप्रदायिक पहचान को बढ़ावा दिया, जिससे हिंदू, मुस्लिम और सिखों के बीच तनाव को बढ़ावा मिला। समय के साथ, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, सामाजिक–आर्थिक असमानताओं और सांस्कृतिक मतभेदों के कारण धार्मिक समुदायों के बीच अविश्वास और दुश्मनी बढ़ी। मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व वाली अखिल भारतीय मुस्लिम लीग द्वारा एक अलग मुस्लिम राष्ट्र की मांग और उसके बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिरोध ने सांप्रदायिक तनाव बढ़ा दिया। खासकर मिश्रित धार्मिक आबादी वाले क्षेत्रों में आर्थिक अनिश्चितताओं और विभाजन के कारण भूमि और संपत्ति खोने की आशंकाओं ने चिंताओं को बढ़ावा दिया ।

1947 में ब्रिटिश भारत के विभाजन के परिणामस्वरूप हताहतों की संख्या और विस्थापन चौंका देने वाला था, जो 20वीं सदी के सबसे बड़े मानवीय संकटों में से एक था। विभाजन के साथ हुई हिंसा, दंगों और जबरन पलायन के कारण बनी नई सीमाओं के दोनों ओर भारी मानवीय पीड़ा और जीवन की हानि हुई।

घटनाओं की अराजक और हिंसक प्रकृति के कारण विभाजन के दौरान प्रभावित लोगों की सटीक संख्या विवादित बनी हुई है। हालाँकि, अनुमान बताते हैं कि सांप्रदायिक हिंसा, नरसंहार और दंगों में सैकड़ों–हजारों से लाखों लोगों की जान चली गई। विभाजन ने मानव इतिहास में सबसे बड़े सामूहिक प्रवासन में से एक को जन्म दिया, जिसमें लाखों लोगों को हिंसा और उत्पीड़न से बचने के लिए अपने घरों से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे भूख, बीमारी और बेघरता जैसे मानवीय संकट पैदा हो गए। बहुत से लोग अपने संबंधित क्षेत्रों में आंतरिक रूप से विस्थापित हो गए थे, और कुछ अस्थायी शिविरों में या सुरक्षित क्षेत्रों में शरण ले रहे थे।

हिंदू, मुस्लिम और सिख सुरक्षा की तलाश में भारत और पाकिस्तान की बनी नई सीमाओं को पार करके भाग गए, जिसके परिणामस्वरूप लाखों लोगों का विस्थापन हुआ। विस्थापन के आघात, प्रियजनों की हानि और हिंसा को देखने से जीवित बचे लोगों और उनके वंशजों पर गहरे मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़े, जिससे पीढ़ियों तक छाप बनी हुई हैं। बुटालिया लिखती है, *''विभाजन भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक दर्दनाक क्षण था। इसने वहां रहने वाले लोगों पर गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ा और यह आज भी उनके जीवन को प्रभावित कर रहा है।''* (बुटालिया, 1998)

इस बड़े पलायन के कारण सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और भाषाओं की हानि हुई, साथ ही धार्मिक स्थलों और स्मारकों का भी विनाश हुआ। समय के साथ, विस्थापित आबादी धीरे–धीरे अपने नए समुदायों और समाजों में एकीकृत हो गई, हालांकि यह प्रक्रिया बहुत चुनौतियों और तनावों से भरी थी।

विभाजन के कारण हुए जनसांख्यिकीय परिवर्तन आज भी भारत और पाकिस्तान के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रभावित कर रहे हैं। विस्थापन, हानि और सांप्रदायिक हिंसा की यादें आज भी लोगों के मस्तिष्क में गहराई तक बसी हुई हैं। विभाजन के दौरान जनसांख्यिकीय बदलाव और सांप्रदायिक विभाजन ने अंतर–सामुदायिक संबंधों पर गहरा प्रभाव डाला है, जिससे दोनों देशों के बीच चल रहे तनाव और संघर्ष में और योगदान हुआ है।

विभाजन का दोनों देशों पर गहरा सांस्कृतिक प्रभाव पड़ा, जिसने भारत और पाकिस्तान दोनों की पहचान, परंपराओं, भाषाओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों को प्रभावित किया। इस घटना ने क्षेत्र के सांस्कृतिक परिदृश्य को नया आकार दिया और यहां के लोगों की साझा विरासत पर एक अमिट छाप छोड़ी।

विभाजन ने विशेष रूप से पाकिस्तान और भारत में क्रमशः उर्दू और हिंदी के बीच भाषाई विभाजन को बढ़ावा दिया। इससे पाकिस्तान में उर्दू और भारत में हिंदी का प्रचार हुआ, जिससे राष्ट्रीय और भाषाई पहचान और मजबूत हुई। विभाजन ने साहित्य, कविता और कला  को भी प्रभावित किया जिसमे हानि, विस्थापन और पहचान के विषयों पर कविताएं और कहानियां लिखी गई । सआदत हसन मंटो, खुशवंत सिंह और इस्मत चुगताई जैसे लेखकों ने विभाजन की मानवीय कहानियों और भावनात्मक जटिलताओं को अपनी रचनाओं में कैद किया। खुशवंत सिंह अपनी किताब ट्रेन टू पाकिस्तान में लिखते हैं,

मुसलमानों ने कहा कि हिंदुओं ने योजना बनाई थी और हत्या शुरू कर दी थी वही हिंदुओं के अनुसार, मुसलमानों को दोषी ठहराया गया था। तथ्य यह है कि, दोनों पक्षों ने हत्या की, दोनों ने गोली मारी, छुरा घोंपा और भाले से हमला किया, दोनों ने अत्याचार किया, दोनों ने बलात्कार किया। (सिंह, 1956)

विभाजन युग ने फिल्म निर्माताओं को समाज और व्यक्तियों पर इसके प्रभाव को चित्रित करने के लिए भी प्रेरित किया। भारत में ''गरम हवा'' और पाकिस्तान में ''गरम कोट'' जैसी फिल्मों ने विभाजन की त्रासदी के मानवीय आयामों को प्रदर्शित किया और आम लोगों के संघर्ष और बलिदान को चित्रित किया। सीमा के दोनों ओर के कलाकारों ने चित्रकला, मूर्तिकला और फोटोग्राफी सहित दृश्य कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से विभाजन की हिंसा को चित्रित किया।

## निष्कर्ष

ब्रिटिश भारत के विभाजन ने क्षेत्र के भू–राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार दिया और इसके लोगों की सामूहिक स्मृति पर गहरे निशान छोड़े। जून 1947 में लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा घोषित विभाजन योजना का उद्देश्य हिंदू और सिख समुदायों की आकांक्षाओं को स्वीकार करते हुए एक अलग मुस्लिम राष्ट्र के लिए अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की मांगों को संबोधित करना था। हालाँकि, जिस जल्दबाजी के साथ विभाजन को लागू किया गया, उसके साथ–साथ दशकों से चली आ रही ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने प्रशासनिक सुविधा के लिए धार्मिक विभाजन को और गहरा कर दिया, एवं सांप्रदायिक तनाव और अविश्वास को बढ़ावा दिया।

रावलपिंडी नरसंहार, अमृतसर दंगे और लाहौर दंगे जैसी प्रमुख घटनाओं ने विभाजन के दौरान सांप्रदायिक हिंसा की क्रूरता को उजागर किया। हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों के बड़े पैमाने पर पलायन के परिणामस्वरूप 20वीं सदी का सबसे बड़ा मानवीय संकट पैदा हुआ, जिसमें लाखों लोग विस्थापित हुए और हिंसा, बीमारी और भूख से लाखों लोगों की जान चली गई। विभाजन के कारण हुए जनसांख्यिकीय परिवर्तन भारत और पाकिस्तान के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रभावित करते रहे। जबकि विभाजन ने धार्मिक और राष्ट्रीय पहचान पर जोर दिया, इससे साझा सांस्कृतिक विरासत और भाषाई विभाजन का भी नुकसान हुआ, जिससे राष्ट्रीय और भाषाई पहचान और मजबूत हुई।

## संदर्भ सूची

अहमद, इश्तियाक, (2021), 1947 में पंजाब का बंटवाराः एक त्रासदी हजार कहानियां, आकार बुक्स।

इफ्तिखार, ख्वाजा, (1981), जब अमृतसर जल रहा था, लाहौरः ख्वाजा पब्लिशर्स।

खान, यास्मीन, (2007), द ग्रेट पार्टीशनः द मेकिंग ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान, गुडगावः पेंगुइन।

खोसला, जी.डी., (2002), स्टर्न रेकोनिंग, दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

गोडबोले, माधव, (2002), द होलोकास्ट ऑफ इंडियन पार्टीशन, न्यू दिल्ली, रूपा को.।

जलाल, आयशा, (1995), द सोल स्पोक्समैनः जिन्ना, द मुस्लिम लीग एंड द डिमांड फोर पाकिस्तान, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

टालबोट, इयान, (2009), गुरहरपाल सिंह, द पार्टीशन ऑफ इंडिया, दिल्लीः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

पांडे, ज्ञानेंद्र, (2001), रिमेंबरिंग पार्टीशन, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

मून, पेंड्रल, (2002), डिवाइड एंड क्विट, दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

मेनन एंड भसीन, (1998), बॉर्डर्स एंड बाउंड्रीसः विमेंस इन इंडियाज पार्टीशन, काली फोर वूमेन।

मंटो, सादत हसन, (1997), मॉटल्ड डाउनः फिफ्टी स्केचेज एंड स्टोरीज ऑफ पार्टीशन, दिल्ली, पेंगुइन बुक्स।

बुटालिया, उर्वशी, (2014), द अदर साइड ऑफ साइलेंसः वॉइसेज फ्रॉम द पार्टीशन ऑफ इंडिया, न्यू दिल्ली, पेंगुइन बुक्स।

रायचौधरी, आनंदिया, (2019), नेरेटिंग साउथ एशियन पार्टीशन, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।

रुश्दी, सलमान, (1981), मिडनाइट चिल्ड्रन, न्यू यॉर्क।

सिंह, खुशवंत, (1956), ट्रेन टू पाकिस्तान, इंडिया, पेंगुइन बुक्स।